Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

# B.Aadhar

## Peer-Reviewed Indexed

## Multidisciplinary International Research Journal

April -2020

SPECIAL ISSUE-CCXXIX (229)

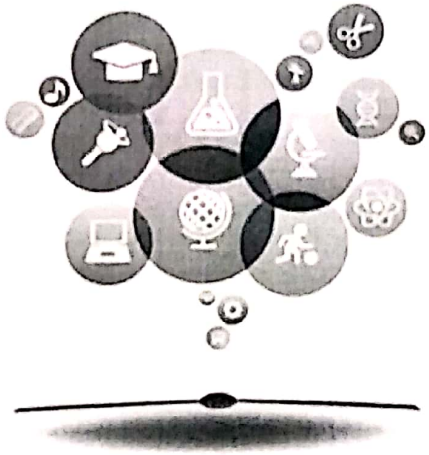

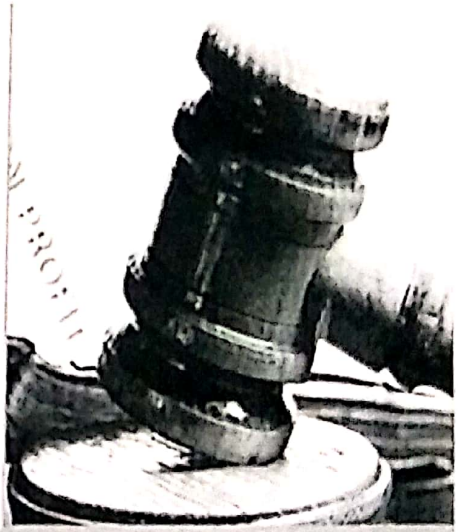

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collag
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned with OKEN Scanner

# INDEX


| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | स्वराज्यरक्षिका रणरागिनी महाराणी ताराबाई | डॉ. माया म.वानखडे | 1 |
| 2 | बाबाराव मडावी यांच्या 'टाहो' कादंबरीतील सामाजिकता | डॉ.पौर्णिमा शिरिष कोल्हे. | 5 |
| 3 | महात्मा गांधीजींचे आरोग्यविषयक विचार | प्रा.डॉ. नितिन चांगोले | 9 |
| 4 | एका महान शास्त्रज्ञाचा संघर्षमय आलेख चित्रित करणारा चरित्रग्रंथ – 'एक होता कार्व्हर' एक समीक्षा | डॉ. पंकज वानखडे | 12 |
| 5 | 'झडप' मधील समाजजीवन | डॉ. पांडुरंग भोसले | 20 |
| 6 | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे संविधान निर्मिती प्रसंगीचे राष्ट्रवाद व राष्ट्रीय एकात्मता बाबतचे विचार .- एकअध्ययन | डॉ.अनिल सी. बनकर | 24 |
| 7 | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषिविषयक विचार | डॉ.एस.एस.सोमवंशी | 28 |
| 8 | आम आदमी की जीविका एवं संघर्ष | डॉ.आनंदप्पा ईरमुखदवर | 32 |
| 9 | हिंदी की संवैधानिक स्थिती | डॉ.गायत्री मिश्रा, | 36 |
| 10 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवाद विषयक विचारांचे महत्व व प्रासंगिकता | प्रा. प्रेरणा आर.रत्नपारखी | 40 |
| 11 | "ग्रामीण व शहरी भागातील विद्यार्थ्यांच्या (मुल व मुली) शैक्षणिक अभिवृत्तीचा तुलनात्मक अभ्यास" | डॉ.गुणवंत सोनोने | 45 |
| 12 | संघर्शषील नारी की कहानी 'नारी तुम केवल सबला हो' | प्रा.डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर | 52 |
| 13 | ऋगवेद मे नारी का स्थान | सहा. प्रा. प्रज्ञा इंगळे | 56 |
| 14 | मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में जैनेंद्र का योगदान : एक अनुशीलन | **डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट** | 58 |
| 15 | सहकारविषयक मानव संसाधन व कौशल्य विकास | **विजयकुमार एम. गवई** | 65 |
| 16 | शेतकऱ्यांसमोरील आव्हाने व उपाययोजना | प्रा.डॉ.अभय श्रीहरी लाकडे | 68 |
| 17 | उस्ताद गुलाम मुस्ताफ खान इनके सांगितिक विचार | प्रा.नाना ग.जाधव | 73 |
| 18 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री शिक्षणविषयक विचार | **प्रा. डॉ. मंदाकिनी मेश्राम** | 77 |
| 19 | लॉकडाउन और पर्यावरण संरक्षण संवर्धन | डॉ. शारदा महाजन | 80 |




Scanned with OKEN Scanner

**B.Aadhar** *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ( (SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
April 2020

# उस्ताद गुलाम मुस्ताफ खान इनके सांगितिक विचार

प्रा.नाना ग.जाधव
डॉ.एल.बलखंडे कॉलेज ऑफ ऑटर्स ॲण्ड कॉमर्स पवनी.जि.भंडारा.

भारतीय संगीत पध्दतीयोमे बाहोत सारे उस्ताद ज्ञानी पंडित हो गये है/ इन उस्तादोने अपने गुरू से अपने अपने हिस्से का ऑलम लेके. सांगीतिक विश्व मे बडा मकाम पाया है। इनकी वजहसे आज पुरे विश्व मे भारतीय संगीत फैला हुवा है। आज भी कूच सागीर्द अपने घराणो का नाम रोशन कर रहे है। इसलीये कूच संशोधकोने इन उस्तादोके उपर संशोधन हि किया है।

उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान कि विचारो कि तरहा उस्ताद बडे गुलाम अली खान,उस्ताद अमीर खान, पंडित पटवर्धन, ओमकारनाथ ठाकूर,कृष्णराव शंकर पंडीत, उस्ताद हाफीज अली खान,उस्ताद अल्लोदिन खान,उस्ताद अली अकबर खान,पंडीत भिमसेन जोशी, पंडीत जसराज,कुमार गंधर्व,पंडीत रवी शंकर,उस्ताद अमजद अली खान,उस्ताद विलायत हुसेन खान, शिव कुमार शर्मा इन्होने भी अपने सांगीतिक विचारो का बडे पैमाने मे प्रकटीकरण किया है। मगर इन विचारो के तुलना मे उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान के विचार मुझे काफी अच्छे लगे. मेरे दिल को भा गये इसलीये वो विचार हर समाज तक पोहचणा चाहिये। इसलिये उनके विचारोका संशोधन करने का छोटासा प्रयास कर रहा हु।

उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान ने अपने घरानो के उस्तादो के सात रहकर बहोत सारी तालीम हासील कि है। अपने तीनो हि उस्ताद पिता वारस हुसेन खान, काका उस्ताद फिदा हुसेन खान और निसार हुसेन खान इनके अपने घरानो के नुस्के शिककर १८ तास संगीत साधना कि और अपने उस्ताद के विचारो का बहोत चिंतन मनन किया और खुद कि एक संगीत प्रणाली निर्माण कि. वो मै मुझे जो अच्छी लगी वो प्रस्तुत करणे जा राहा हु।

१) गाना बजाना सुर और लय का काम है

उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान कहते है। गाना,बजाना,सुर और लय के बिगर नही होता. इसलीये जो गायक राग, ताल, का ज्ञानी है। और जिस साधको ने गुरू के सात रहकर तालीम हासील कि है। वो ही सुर ताल लय मे गाना बजाना कर सकता है। उसका संगीत का ज्ञान काफी बढता है।चाहे वो कौनसा ही गाना बजाना रहेने दो उसको दिक्कत नही आती. इसलीये सुर और लय का ज्ञान बढाना है। तो अच्छे गुरू के पास जा के संगीत शिकणा चाहिये और गाना बजाना करणा चाहिये अन्येथा नही करणा चाहिये इसीलिये गुलाम मुस्तफा खान कहते है। कि गाना बजाना सूर और लय का काम है।

२) गाना शरीर है। ताल उसकी आत्मा है/ अल्फाज उसका ड्रेस है।

उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान का यह विचार संगीत साधको के लिये बाहोत हि महत्वपूर्ण है। शरीर कि उपमा गाणे को दी है। ताल कि उपमा आत्मा को दी है/ और अल्फाज कि उपमा ड्रेस को दि है। शरीर को जितना सजाया जायेगा उतनाही सुंदर दिखेगा और अल्फाज यांनी ड्रेस जितना सुंदर रहेंगा उतणाही गाना यांनी शरीर सुंदर दिखेगा और गाणे मे ताल, याने शरीर मे आत्मा नही राहा तो वो गाना याने शरीर जीवित नही रहेगा और जिवीत शरीर हि काम मे आता है। वैसेही जिवीत गानाही सून सकते है। इसीलिये हर शरीर मे आत्मा कि जरूरत होती है। शरीर मे आत्मा रहा तो शरीर धडकता है। वैसेही गाणे मे ताल राहा तो उसके बीट पर ताल बजता है। मरा हुवा शरीर कोई काम नही, वैसेही ताल विरहीत,मरा हुवा गाना, कोई सुनता नही, जिवीत शरीर अलग अलग ड्रेस से किसीभी हदतक सुंदर दिख सकता है। वैसेही गाने मे ताल राहा तो वो गाना किसीभी हदतक सून सकते है। इसलीये उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान का यह विचार बोहोतही लाभदायक है।

३) रियाज कि भगवान समान पूजा करणी चाहिये?

जिंदगी मे कूच हासील करणे के लिये जैसे सुबह उठके नहाके अगरबत्ती और फुल अर्पण करके पुरी श्रध्दा से भगवान की पूजा करते है। वैसे ही संगीतको साध्ये करणे के लिये रियाज की



Scanned with OKEN Scanner